राम नरेश पाठक

कवि राम नरेश पाठक के जनम 12 नवम्बर 1929 के औरंगाबाद जिला के केतकी गाँव में भेल हल। इनकर 1952 **(अनामा)** 1958 **(क्वार की साँझ)** 1962 **(प्रक्रिया के एक कवि)**, 1988 **(एक गीत सिखने का मन)** 1991 **(मैं अथर्व हूँ)** आदि कविता संगरह परकासित भेल। ई नवगीत के परनेता हलन। इनकर निधन 22 अक्टूबर 1999 के हो गेल।

कोमलकांत पदावली में रचल इनकर गीत सच्चे में बड़ी तरल आउ सजल हे। संगीत लहरी पर सजल गीत जब इनकर कंठ से फूटऽ हल तब स्रोता मंत्र-मुग्ध रह जा हल।

मधुमास गीत में अंचल के प्राकृतिक सौंदर्य के मादक छटा के बेजोड़ चित्रन हे। वसंत अभी-अभी उतरल हे। मधु से मत्त सुक्ल पक्ष के रात में टह-टह उज्जर चाँदनी मानो इंद्र के कउनो अप्सरा, उर्वशी के रूप धारण करके अप्पन चमक आउ छटा बिखेर रहल हे। ई कला गीत नृत्यगीत सैली पर अधारित हे। बिम्ब विधान आउ प्रतीक योजना देखे लायक हे। अलंकार के भरमार हे कविता में।

मधुमास

मधुआ से मातल टहटह इँजोरिया
ई टहटह इँजोरिया,
जुलुम भेलइ हो, ई जुलुम भेलइ हो।
कउन उरबसिया इन्नरवा के परिया,
इन्नरवा के परिया
चमकि चललइ हो, ई जुलुम भेलइ हो।

बन-बन छुलिया परसिया के गछिया के
सउँसे देहे चिनगी फुलाये,
अमवाँ–महुइया के मनके दरदिया
ऊ धरती पर लोटे छितराये

काँची-कचनरिया के पोरे-पोरे टिसुना
तरुनि भेलइ हो, ई जुलुम भेलइ हे ।

खेतवा-पथरिया में बइठल गुजरिया
नैना के अबिरिया उड़ाये
धरती तो धरती ऊ हुलसइ अकसवा
कि धनिया के रूप न भुलाये

कोइली के बँसुली से पिलकइ दरुअवा
जे पिलकइ दरुअवा, ई जुलुम भेलइ हो ।

छोटकी ननदिया सैयाँ कलकतिया
गोरे-गोरे पतिया पेठाये
अबकी के होलिया हम्मे धनि मिलबइ
से बारहो बियोग न सहाये

फगुनी बयरिया से रसे-रसे बहकइ
जे रसे-रसे बहकइ
सुलगि उठलइ हो, ई जुलुम भेलइ हो ।

चर-चउपलवा कि खेत-खरिहनियाँ
कि बाबा के मनीरिया बउराये
अबीर गुललिया से ललकी बदरिया से
ठगिनी के नैना झमकाये

रस के तलइया में सब केउ ऊभ-चुभ
कि सब केउ ऊभ-चुभ
बिसरि गेलइ हो, ई जुलुम भेलइ हो ।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) मधुआ से मातल केकरा कहल गेल हे ?
   (ख) इहाँ 'उरबसी' सबद के परयोग काहेला करल गेल हे ?
   (ग) जुलुम का हे भेल ?
   (घ) मन के दरद का हे ?
   (ङ) बारहो बियोग बतावऽ ।

लिखित :

1. 'मधुमास' कविता के रचयिता राम नरेश पाठक पर चार वाक्य लिखऽ आउ उनकर दू गो रचना के नाम बतावऽ ?
2. मधुमास के अयला पर परकिरती में कउन-कउन परिवर्तन हो जाहे ?
3. मन मोहे ओला मधुमास के कुछ दिरिस बतावऽ ?
4. खेत आउ खरिहान सउँसे जहान में मधुमास कउन–कउन रस लेके आवऽ हे ?
5. संदर्भ सहित भाव लिखऽ :—
   (क) खेतवा-पथरिया में बइठल गुजरिया के नैना के अबिरिया उड़ाये / धरती तो धरती ऊ हुलसइ अकसवा कि धनिया के रूप न भुलाये / कोयली के बँसुली से पिलकइ दरुअवा जे पिलकइ दरुअवा, ई जुलुम भेलइ हो ।
   (ख) छोटकी ननदिया सैंया कलकितया गोरे-गोरे पतिया पेठाये / अबकी के होलिया हम्मे धनि मिलबइ / बारहो वियोग न सहाये ।
   फगुनो बयरिया से रसे-रसे बहकइ, जे रसे-रसे बहकइ सुलगि उठलइ हो, ई जुलुम भेलइ हो।

भासा-अध्ययन :

1. कविता में आयल बिम्ब आउ प्रतीक चुन के लिखऽ ? तू ओकरा से कहाँ तक सहमत हऽ ?
2. कवि के छंद आउ अलंकार के नाम देइत बतावऽ कि तोरा ई कइसे परभावित कर रहल हे ?
3. कविता में कुछ तत्सम सबद के परयोग भेल हे, ओकरा छाँट के लिखऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. आज पर्यावरण परदूसन आउ ई 'मधुमास' कविता के मिलल-जुलल भाव पर अप्पन विचार व्यक्त करऽ ।
2. मधुमास से संबंधित दू गो कविता विद्यालय पुस्तकालय से उपलब्ध करके विसय सिच्छक के सुनावऽ।
3. नवगीत केकरा कहल जाहे ?

सब्दार्थ :

मधुआ	—	मिठास से भरल
मातल	—	परभावित
उरबसिया	—	इन्द्रलोक के एगो परी
चिनगी	—	तितकी
खेतवा-पथरिया	—	खेत-बधार
गुजरिया	—	गाँव के अउरत
नयना	—	आँख
वियोग	—	बिछोह
रसे-रसे	—	गते-गते ।

●●●